19 झलकियाँ – सभ्यताओं के माध्यम से एक कक्षा की यात्रा

सीता नटराजन



सामाजिक अध्ययन क्या है? बच्चों के व्यक्तित्व के विकास के लिए अनुभवात्मक ढंग से सीखने, कौशल निर्माण करने और जीवन के विभिन्न पहलुओं के प्रति उनके दृष्टिकोण को व्यापक बनाने में कोई इस विषय से कैसे सहयोग प्राप्त कर सकता है? और अन्त में, सामाजिक विज्ञान के शिक्षक के रूप में कक्षा में अपनाई गई अध्यापन विधि के द्वारा कोई कैसे यह सुनिश्चित कर सकता है कि इस विषय की गतिशीलता और उमंग की खूबी और मजबूत बने तथा इसे कक्षा की चहारदीवारी से बाहर ले जाया जा सके?

इस प्रकार के विषय में विद्यार्थियों के लिए इसकी बहुत गुंजाइश रहती है कि वे ऐसे प्रश्न पूछ सकते हैं और उनके उत्तर की खोजबीन कर सकते हैं जो उन्हें वास्तविक प्रतीत होते हैं। उन अवधारणाओं के बारे में शोध कर सकते हैं जिनसे उन्हें गहरा जुड़ाव महसूस होता है। वे चीजों के बारे में अपनी खुद की सूक्ष्म परख निर्मित कर सकते हैं और अपने विकास के साथ ही इन प्रश्नों व खयालों को आगे बढ़ाते हुए उनमें और गहरे जा सकते हैं।

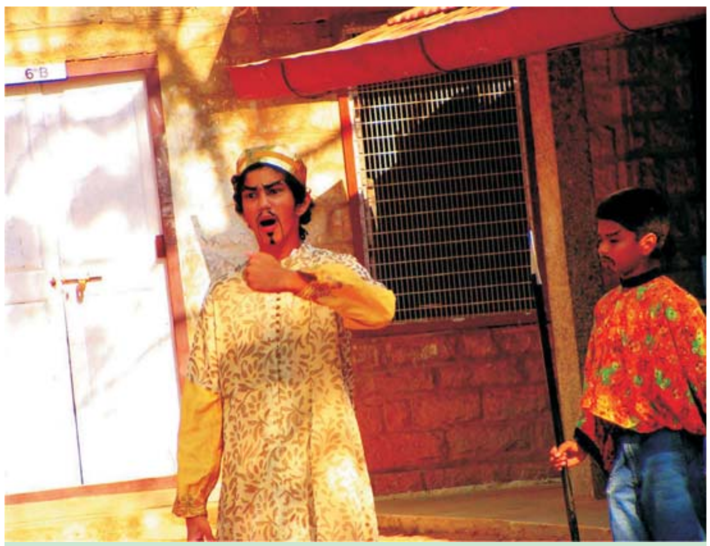
सामाजिक अध्ययन के शिक्षक की हैसियत से, बच्चों के साथ कई तरह के अनुभवों और प्रयोगों के साथ की गई यह शिक्षणयात्रा व्यक्तिगत रूप से मेरे लिए एक रोमांचक व सार्थक अनुभव रहा है।

ऋषि वैली में सामाजिक अध्ययन केवल एक वर्ष, अर्थात कक्षा 6 के पाठ्यक्रम में ही शामिल किया जाता है। यह शुरुआती वर्षों में पढ़ाए जाने वाले पर्यावरण अध्ययन तथा बाद के वर्षों में पढ़ाए जाने वाले भूगोल व इतिहास के ज्यादा संकेन्द्रित विषयों के बीच की कड़ियों और अन्तरों के लिए यह एक सेतु के रूप में काम करता है। यह काफी हद तक दुनियाभर की प्राचीन सभ्यताओं और तत्कालीन नगरों – प्राचीन चीन के लोयाँग, यूनान के एथेंस और स्पार्टा, ग्रेट ब्रिटेन के लन्दन और भारत के बनारस – का अध्ययन है। इसमें, बच्चे इनमें से प्रत्येक नगर से होते हुए, उनकी विभिन्न संस्कृतियों को समझते हुए इनमें से कुछ समाजों के आज की वैश्विक संस्कृति पर पड़े प्रभावों का अध्ययन करते हैं।

इस विषय के अपने अध्यापन के पहले दो वर्षों के दौरान मुझे यह अहसास हुआ कि बच्चे विषयवस्तु में शामिल तथ्यों और उसके अधिकांश सैद्धान्तिक भाग को अक्सर भूल जाते हैं। पर, सहयोगपूर्ण कार्यों, अध्ययन यात्राओं, प्रायोगिक गतिविधियों में भागीदार होने के बहुमूल्य अनुभव, नाटकों और नृत्यों में भाग लेने का मजा, लोगों के साथ किए गए वादविवादों व साक्षात्कारों से मिले नए विचार, खुद के द्वारा किए गए प्रोजेक्ट लगाई गई प्रदर्शनियाँ, सुनी गई असंख्य कहानियाँ आदि उनकी याददाश्त में बस जाते हैं। तो संक्षेप में, जो चीज उनके साथ रह जाती है वह है मनुष्य, तथा किसी भी समाज की व्यवस्था के अध्ययन की गहराई की सूक्ष्म समझ जो फिर बाद की कक्षाओं में इतिहास व भूगोल जैसे विषयों के साथ उनके रिश्ते को मजबूत बनाकर उसे और विकसित करती है। इस प्रकार, हमेशा ही इन भिन्न–भिन्न धागों के साथ खेलते हुए ही मैंने सामाजिक अध्ययन नामक इस वस्त्र के रंग–बिरंगे व शानदार चित्रपट का ताना–बना बुना है।

यहाँ मैं कक्षा 6 में चीन व यूनान के, तथा कक्षा 5 में मिस्र के बारे में अपनी अन्वेषण यात्रा के क्या और कैसे का विहंगम दृश्य प्रस्तुत कर रही हूँ। मैं यहाँ यह बताना चाहूँगी कि हमने हमारे पाठ्यक्रम में शामिल सभी सभ्यताओं व नगरों के लिए अपनी खुद की पाठ्यसामग्री और पुस्तिकाएँ तैयार की हैं।

चीन



Chin Shi Huangdi in the play

हमने लोगों, स्थानों, अलग–अलग भूदृश्यों, वास्तुकला आदि की तस्वीरों की एक प्रदर्शनी के साथ चीन की खोज यात्रा शुरू की। हमने ऐसी कुछ वस्तुएँ और यंत्र भी प्रदर्शित किए जिनका आविष्कार और सबसे पहला उपयोग चीन में हुआ था, और जिन्हें आज भी दुनियाभर में इस्तेमाल किया जा रहा है (रेशम, दिक्सूचक, छाता, कागज़, आदि..)।

इसके बाद चिन शी ह्वान्डी के माध्यम से बहुत ही नाटकीय ढंग से बच्चों के बीच चीन का परिचय कराया गया; वह चीन का पहला

सम्राट था और उसने देश के छः युद्धरत राज्यों को सैनिक विजयों द्वारा एकीकृत किया था। सम्राट के मकबरे के नजदीक यथार्थ आकार के घोड़ों के साथ टैराकोटा के सैनिकों की दफनाई हुई विशाल सेना की तस्वीरें और सम्राट की जिन्दगी, उसकी क्रूरताओं, तथा उपलब्धियों के बारे में ढेर सारी अन्य जानकारी बच्चों का ध्यान आकर्षित करने वाली बड़ी. जबरदस्त शुरुआत साबित हुई। इस बिन्दु पर बच्चों ने खुद ही मौत के बाद के जीवन की मान्यताओं के बारे में एक दिलचस्प चर्चा छेड़ दी। इससे फिर सहज ही, विभिन्न संस्कृतियों में, तथा भारत के भी अलग–अलग धर्मावलम्बियों के बीच मृत्यु व उसके बाद होने वाले संस्कारों को लेकर क्या भेद हैं, इसके बारे में एक तुलनात्मक अध्ययन शुरू हो गया। बच्चों ने उनके परिवारों द्वारा पालन किए जाने वाले विधि–विधानों और उनका पालन करने के कारणों के बारे में बात की। इससे उन्हें कुछ विधि–विधानों की वैधता के साथ ही कुछ ऐसे रिवाजों के बारे में सोचने को भी मजबूर होना पड़ा जिनका कोई वाजिब अर्थ ही समझ में नहीं आता था।

हान राजवंश के अध्ययन द्वारा राजवंश, देश का प्रदेशों में विभाजन, ऊँचे–नीचे पदों की शृंखलाबद्ध नौकरशाही या प्रशासनिक सेवा, और योग्यता–आधारित सार्वजनिक परीक्षाओं आदि से बच्चों का परिचय हुआ। और इस अध्ययन से फिर बच्चों के बीच हमारे देश के प्रशासनिक ढाँचे के बारे में एक शानदार चर्चा शुरू हो गई।

'कन्फ्यूसियस के जीवन और शिक्षाओं,' और किसी भी परिवार व समाज के सभी सदस्यों के कर्तव्यों और जिम्मेदारियों के बारे उसके विचारों पर आधारित पाठ बच्चों की समझ के तल पर बहुत ही खूबसूरती से दर्शन की खोज की तरफ उनका ध्यान आकर्षित करता है। और इससे हमें एक ऐसा मंच मिला जिससे कि हम कुछ समय के लिए स्कूल के संस्थापक व महान दार्शनिक, जे.कृष्णमूर्ति के 'स्वतंत्रता और उत्तरदायित्व' सम्बन्धी विचारों को समझने का प्रयास कर सके।



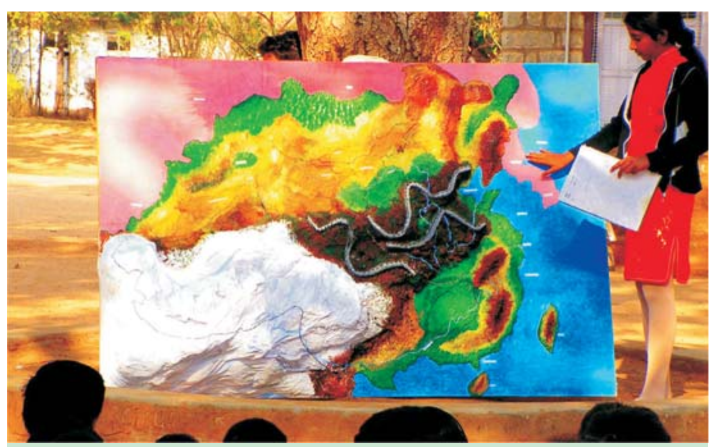
Dragon Dance

उन दिनों के चीन में बच्चों के जीवन और उनकी परवरिश तथा आज के बच्चों, अर्थात, खुद विद्यार्थियों की जिन्दगी के बारे में, एवं दोनों दुनियाओं में जीने के लाभ व हानियों के बारे में कराया गया तुलनात्मक अध्ययन कक्षा के लिए बहस का बहुत अवसर देने वाला व लाभकारी कार्य साबित हुआ।

लगभग उसी समय, ऋषि वैली की एक पूर्व छात्रा जो उस वक्त चीन में रह रहीं थीं, स्कूल आईं। उन्होंने मौजूदा दौर के चीन के अपने ज्ञान – जैसे, माओ व उनकी नीतियाँ, उन नीतियों के देश पर पड़े प्रभाव, प्रमुख ऐतिहासिक स्थल और सैर करने योग्य स्थान आदि – को बड़े भावपूर्ण अन्दाज़ में बच्चों के सामने रखकर उनका ज्ञानवर्धक मनोरंजन किया। उनके साथ बीते कुछ सत्र बच्चों के लिए बहुत प्रेरणादायी व मूल्यवान रहे।

इस अन्वेषण प्रक्रिया का निर्णायक पड़ाव स्कूली सभा में अन्य बच्चों के साथ अपने नए ज्ञान को बाँटने के लिए पूरी कक्षा द्वारा शुरू किया गया डेढ़ महीने लम्बा एक प्रोजेक्ट था।

हमने पैमाने पर आधारित चीन का एक विशाल त्रिआयामी उभारदार मानचित्र बनाया। इसमें हमने उसकी तमाम प्राकृतिक और भौगोलिक विशेषताओं, रेशम व्यापार के मार्ग तथा चीन की विशाल दीवार को चिन्हांकित किया। गाँव के कुम्हार की मदद से हमने टैराकोटा सेना की सुन्दर प्रतिकृतियाँ निर्मित कीं। पारम्परिक चीनी ड्रैगन नृत्य के लिए तीस फीट लम्बे दो ड्रैगनों का निर्माण करना इस प्रोजेक्ट का बहुत महत्वाकांक्षी भाग था।



China Map

बाज़ार के दृश्य, जहाँ यह दर्शाया जाना था कि दार्शनिक व शिक्षक किस तरह सार्वजनिक स्थानों पर लोगों से मिलते थे और उनसे जीवन के सत्य के बारे में बात करते थे, तथा चिन शी ह्वांग्डी के दरबार के एक दृश्य, और बाद में उसकी हत्या के एक प्रयास का चित्रण करने वाले नाटक, अन्तिम दिन के प्रदर्शन हेतु चुने गए प्रसंग थे। विद्यार्थियों के एक अन्य समूह ने 'बुद्धिमत्ता के मोती' को

लेकर अच्छाई और बुराई के बीच हुई लड़ाई को निरूपित करने वाले ड्रैगन नृत्य का अभ्यास किया।

बच्चों की सभा जबर्दस्त रूप से सफल साबित हुई। पार्श्व में बजता बड़ा मधुर चीनी संगीत तथा बहुप्रतीक्षित ड्रैगन नृत्य उसकी विशेषता रही। और इस प्रकार एक प्राचीन सभ्यता की हमारी खोज समाप्त हुई।

वे विद्यार्थी अब कक्षा 10 में हैं और यह देखकर बहुत खुशी और प्रोत्साहन मिलता है कि वे लोग कितने रोमांच के साथ अभी भी उस अनुभव को याद करते हैं।

प्राचीन यूनान



Greek Mosaic

इस सभ्यता पर विद्यार्थियों के साथ काम करते हुए मैंने तकरीबन इसी कार्यविधि का अनुसरण किया। प्राचीन यूनान के बारे में एक पुस्तिका, पुस्तकालय की किताबों के समृद्ध स्रोत पर आधारित सन्दर्भ कार्य, मानचित्र, चित्र, चार्ट आदि हमारे द्वारा इस्तेमाल किए गए बुनियादी साधन थे। एक और नया कौशल था, दिमागी नक्शे बनाना, जिसके बारे में बच्चों को बताना मुझे महत्वपूर्ण लगा। एक विषय की तरह से सामाजिक अध्ययन की जरूरत होती है कि बहुत सी सूचनाओं, तथ्यों, आँकड़ों और अन्य जानकारियों को याद रखा जाए। मुझे लगता है कि दिमागी नक्शे बनाना विवरणों को एक गुच्छे के रूप में इकट्ठा रखने का सबसे आसान तरीका है। इसलिए, मैंने दिमागी नक्शों के बारे में टोनी बुजान की तकनीकों का इस्तेमाल किया और कुछ ही सत्रों में ऐसा लगा कि विद्यार्थी यूनान से सम्बन्धित भिन्न–भिन्न विषय–प्रसंगों पर सुन्दर, रंग–संकेतों वाले दिमागी नक्शे बनाने में दक्ष हो गए थे।

इनमें से कुछ प्रसंग वहाँ की भूमि की भौगोलिक विशेषताओं, किसी यूनानी कस्बे के ढाँचे, उसके लोगों की रोजमर्रा की जिन्दगी व उनके पेशों, जीवन के प्रति एक दूसरे से बिलकुल भिन्न नजरिया रखने वाले उसके दो मुख्य शहरों – स्पार्टा और एथेंस – और उनके झगड़ों, आदि को समझना थे।

पेरीक्लीज़ के सक्षम नेतृत्व में यूनान में हुए लोकतंत्र के उद्भव पर आधारित पाठ एक यादगार अनुभव था। इस प्रसंग ने विस्तृत होकर कई गतिविधियों का रूप ले लिया – मुख्यतः, जानकारियों को एक दूसरे के साथ बाँटने के माध्यम से सरकार के अलग–अलग रूपों के बारे में किया गया एक तुलनात्मक अध्ययन; तथा राजतंत्र, कुलीनतंत्र, अल्पतंत्र व लोकतंत्र के बीच भेद दिखाने के लिए की गईं विनोदपूर्ण नाटिकाएँ। बच्चों को इस बात का अनुभव दिलाने के लिए कि लोकतंत्र क्या होता है और वह कैसे काम करता है, मैंने अलग–अलग टीमों के बीच उनके स्कूली जीवन के विभिन्न पहलुओं पर आधारित बहसें आयोजित कीं। इसके पीछे उद्देश्य था उन्हें यह समझाना कि किस तरह देश के महत्वपूर्ण मुद्दों के बारे में चर्चाओं व बहसों के माध्यम से निर्णय किए जाते हैं।



Parthenon

जब हमने यूनानी कथाओं और किवदन्तियों को लेकर अपनी खोज शुरू की तो फिर बच्चों को 'नुक्कड़ नाटक' की अवधारणा से परिचित कराया गया। तकरीबन छः से सात कहानियाँ पढ़ने के बाद हमने चार से पाँच विद्यार्थियों के छोटे–छोटे समूहों में प्रत्येक कहानी के लिए पटकथा लिखने का कार्य शुरू किया। फिर, कुछ अभ्यासों के बाद हमने दूसरी कक्षाओं के बच्चों और शिक्षकों को अपने नाटक देखने के लिए आमंत्रित किया। प्रत्येक नाटक के लिए हमने स्कूल प्रांगण के अलग–अलग हिस्सों में कोई न कोई प्राकृतिक स्थान चुना और कहानियों को न्यूनतम सहायक वस्तुओं व पोशाकों के साथ पेश किया गया। इस पूरे अनुभव का सबसे रोमांचक हिस्सा था दर्शकगण जो नाटकों को देखने के लिए उसके अभिनेताओं के साथ इधर से उधर हो रहे थे।

हमने ग्रीक – क्रूसिबल ऑफ सिविलाइज़ेशन नामक एक वृत्तचित्र भी देखा। एक शिक्षक के रूप में मेरे लिए बहुत ही विचारोद्दीपक गतिविधि तब हुई जब मैंने बच्चों को ही यूनान से सम्बन्धित कुछ सामान्य विषय–प्रसंगों का प्रभारी बना दिया और उनसे खुद को छोटे–छोटे समूहों में बाँटकर कक्षा के दूसरे बच्चों को पढ़ाने के लिए

कहा। बच्चों ने कुछ समय के लिए शिक्षक होना बहुत पसन्द किया, पर यहाँ जो उल्लेखनीय बात है वह हर समूह की बहुत गहराई से की गई तैयारी थी। न सिर्फ उन्होंने आपस में जिम्मेदारियों का बँटवारा किया, और अपने दोस्तों को अपने ही शिक्षकों द्वारा अपनाए जाने वाले तरीकों से संकेत लेना सिखाया, बल्कि उन्होंने पाठ पढ़ाने के अपने खुद के तरीके भी अपनाए। बल्कि, उन कुछ सत्रों में मैंने अपने 'विद्यार्थी शिक्षकों' से पढ़ाने के कई और सृजनात्मक तरीके सीखे।

हमने एक बार फिर यूनान पर होने वाली स्कूली सभा की तैयारी के लिए एक महीने का प्रोजेक्ट हाथ में लिया। इस बार विद्यार्थियों ने पार्थेनॉन का प्रतिरूप बनाया, पच्चीकारी द्वारा दृश्यों को तथा लोगों को चित्रित किया (यह बच्चों के यूनानी पच्चीकारी के अध्ययन पर आधारित था), गत्तों से यूनानी बरतनों के सुन्दर प्रतिरूप बनाए जिनपर उत्कृष्ट चित्रकारी थी, और यूनानी मानचित्र का एक बड़ा द्विआयामी प्रतिरूप भी बनाया। नाटकों के लिए जो विषय–प्रसंग चुने गए उनमें शामिल था यह दर्शाना कि देश के महत्वपूर्ण मुद्दों को लेकर होने वाली सभाओं में यूनान के नागरिकों द्वारा किस प्रकार लोकतांत्रिक ढंग से चर्चाएँ की जाती थीं। एक अन्य विषय–प्रसंग था तीन प्रसिद्ध यूनानी कथाएँ। लड़कियों द्वारा एक बेहद खूबसूरत यूनानी पारम्परिक नृत्य का प्रदर्शन किया गया।



Greek Vases

प्राचीन मिस्र

बच्चे इस सभ्यता के बारे में उनके पाँचवी कक्षा के सत्र के सबसे अन्तिम हिस्से में पढ़ते हैं – यह प्रसंग उन्हें कई बातों को समझने के लिए अच्छी तरह तैयार कर देता है जैसे कि किसी सभ्यता का क्या अर्थ होता है, पुरातत्व–विज्ञान क्या होता है, नगर कैसे अस्तित्व में आते हैं, समाज क्या है, सामाजिक अनुक्रम क्या होता है, आदि।

मैंने बच्चों के साथ इस पूरे प्रसंग को आगे बढ़ाने के लिए द्विमार्गी ढंग से काम करना तय किया – कक्षा में सीखने के साथ ही साथ शोध–आधारित प्रोजेक्ट का तरीका अपनाना। प्रत्येक समूह को इस सभ्यता से सम्बन्धित एक प्रमुख प्रसंग के बारे में शोध करने का और अपने शोध पर आधारित प्रतिरूप, चार्ट तथा अन्य चीजें बनाने का कार्य सौंपा गया। जिन प्रसंगों को अध्ययन में शामिल किया गया था वे थे – नील नदी, फैरो (मिस्री सिंहासन, विभिन्न प्रकार के मुकुट, पारम्परिक दाढ़ी आदि), उनके देवी–देवता, प्रस्तर ताबूत और शव–परिरक्षण, पिरामिड, वहाँ के घर और उनके भोजन के प्रकार (हमने पारम्परिक अनगढ़ मिस्री बिस्कुट भी बनाए), वहाँ के लोगों के पेशे और सामाजिक अनुक्रम (चित्रावली के रूप में) और मिस्री चित्रलिपि। हमने लगभग तीन सप्ताह तक, पुस्तकालय तथा इन्टरनेट की मदद से पढ़ाई की व सन्दर्भ कार्य किए, शिक्षक के साथ सैद्धान्तिक कक्षाओं में तैयारी की तथा चार्ट तैयार किए। सभी बच्चों ने खुद अपनी मिस्री पोशाकें तैयार की थीं।





प्रदर्शनी के एक सप्ताह पूर्व, प्रत्येक समूह को अपने कार्य को पूरी कक्षा के समक्ष प्रस्तुत करना था। इससे बच्चों को प्रस्तुतिकरण का कौशल, व अपने कार्य पर आधारित विभिन्न प्रकार के प्रश्नों का सामना करने की योग्यताएँ सीखने में मदद मिली। जब कक्षा के भीतर प्रदर्शनी की तैयारी कर ली गई, तो निर्णायक दिन की पिछली

रात में और मेरे एक अन्य सहयोगी, हम दोनों बच्चों की तैयारी कराने के उद्देश्य से दर्शकों की भाँति वहाँ गए और प्रत्येक समूह से उनके कार्य से सम्बन्धित प्रश्न पूछे व उन्हें अपने फीडबैक व सुझाव दिए। इस तरह से बच्चों का यह अध्ययन परिपूर्ण, सहयोगात्मक और समग्र था, हालाँकि प्रत्येक समूह ने अपने–अपने प्रसंगों पर पूरी तरह डूब कर काम किया था।

इस अन्वेषण की शुरुआत को शुरू किए तीन साल हो चुके हैं, और यात्रा– अपने विषय को और बेहतर ढंग से पढ़ाने की नई पद्धतियाँ खोजने की यात्रा, सर्वाधिक सार्थक सम्भव प्रक्रियाओं के माध्यम से निकलकर सामने आने वाले प्रश्नों के उत्तर ढूँढ़ने की यात्रा, बच्चों द्वारा किए जाने वाले अतीत व वर्तमान के अध्ययन द्वारा समाज व संस्कृति के प्रति उनके दृष्टिकोण को आकार देने में अन्तरावलोकन व प्रेक्षण के माध्यम से उनकी मदद करने की यात्रा – अभी जारी है।



Egyptian attire

सीता नटराजन *कृष्णमूर्ति फाउण्डेशन इण्डिया के ऋषि वैली स्कूल में अध्यापिका हैं। वे अँग्रेजी, पर्यावरण अध्ययन, और सामाजिक अध्ययन पढ़ाती हैं। उन्होंने कलकत्ता विश्वविद्यालय से अँग्रेजी साहित्य में एम.ए. किया है। उनकी रुचियाँ हैं पढ़ना, कविताएँ और चित्रकारी। वे 'एक्स्ट्रा लैसन' की एक छात्र प्रयोगकर्ता भी हैं। उनसे इस nats_k@yahoo.com ईमेल पते पर सम्पर्क किया जा सकता है।*